BUDDHISM : THEORY OF NO SOUL

(बौद्ध दर्शन : अनात्मवाद या नैरात्मवाद)

बौद्ध दर्शन अत्यंत ही प्राचीन दर्शन है। इस दर्शन के प्रवर्तक महात्मा बुद्ध थे। महात्मा बुद्ध को गौतम बुद्ध के नाम से भी जाना जाता है, परंतु इनका वास्तविक नाम 'सिद्धार्थ' था। इनका जन्म 563 ई० पू० हिमालय की तराई में कपिलवस्तु के लुम्बिनी नामक स्थान पर हुआ था। 29 वर्ष की अवस्था में ही 'जरा-मरण' के दुःखों को देखकर सत्य की खोज में गृहत्याग कर सन्यास-धारण कर निकल पड़े, इतिहास में यह घटना 'महाभिनिष्क्रमण' के नाम से प्रसिद्ध है। 'दुःखों से मुक्ति' अर्थात् बोधिसत्व की प्राप्ति के बाद गौतम (सिद्धार्थ) बुद्ध कहलाये। "बुद्ध' का अर्थ है 'जानने वाला अर्थात् जिसे ज्ञान का प्रकाश मिल गया है'।

बुद्ध की मृत्यु के पश्चात बौद्ध धर्मावलम्बियों में बहुत ही तेजी से मतभेद उभरकर सामने आया जिसके परिणामस्वरूप बौद्ध-धर्म हीनयान तथा महायान नामक दो सम्प्रदायों में विभक्त हो गया। पुनः दोनों सम्प्रदायों के अनुयायियों में भी मतभेद होना प्रारम्भ हो गया, परिणामस्वरूप कालान्तर में बौद्ध दर्शन के चार सम्प्रदाय हो गये :—(1.) वैभाषिक (2.) सौत्रान्तिक (3.) योगाचार तथा (4.) माध्यमिक सम्प्रदाय।

हीनयान और महायान सम्प्रदायों का वस्तुतः मूल नाम स्थविरवाद और महासांघिक था। जो प्राचीन मूल-बौद्ध धर्म में लेशमात्र भी परिवर्तन नहीं चाहते थे वे स्थविरवादी थे, तथा जो जनमानस की धार्मिक प्रवृत्तियों की सन्तुष्टि के लिए मूल-बौद्ध दर्शन में कुछ आवश्यक परिवर्तन के पक्षधर थे वे महासांघिक थे। बुद्ध की मृत्यु के लगभग सौ वर्ष

Scanned with CamScanner

बाद में बौद्ध-भिक्षुओं की सभा में इस बात पर विवाद हो गया कि बुद्ध की शिक्षाओं को बिना परिवर्तन किये ज्यों-का-त्यों प्रसारित किया जाये अथवा जनमानस की रुचि को देखते हुए उनकी धार्मिक प्रवृत्तियों की सन्तुष्टि के लिए उसमें कुछ परिवर्तन किया जाये। सभा में उपस्थित जो भिक्षु परिवर्तन चाहते थे, उन्होंने परिवर्तन न चाहने वाले भिक्षुओं को संघ से बाहर कर दिया [redacted], जिन्हें अधम भिक्षु कहा जाने लगा। इस प्रकार से स्थविरवादि जो परिवर्तन नहीं चाहते थे उन्होंने महासांघिकों को 'अधम भिक्षु' कहना प्रारम्भ कर दिया। चिढ़कर महासांघिकों ने स्थविरवादियों को 'संकीर्ण-मार्गी' अर्थात् हीनयानी कहना प्रारम्भ कर दिया तथा अपने को 'उदार-मार्गी' अर्थात् महायानी कहना प्रारम्भ कर दिया। तब से दोनों सम्प्रदायों के ये ही नाम प्रचलित हो गये। इन दोनों सम्प्रदायों के अनुयायियों में भी अस्तित्व के प्रश्न पर मतभेद हुए तथा अन्य सम्प्रदायों की आधारशिला रखी गयी :—

"हीनयानी (स्थविरवादी) के वैभाषिक तथा सौत्रान्तिक दो सम्प्रदाय हुए। वैभाषिक सम्प्रदाय के अनुयायी यह मानते थे कि बाह्य-जगत् एवं आन्तरिक चित्त दोनों का अस्तित्व है, तथा बाह्य-जगत् का ज्ञान प्रत्यक्ष द्वारा होता है। वहीं, सौत्रान्तिक सम्प्रदाय के अनुयायी यह मानते थे कि बाह्य-जगत् एवं आन्तरिक चित्त दोनों की सत्ता है, परंतु बाह्य-जगत् का ज्ञान प्रत्यक्ष द्वारा नहीं हो सकता केवल अनुमान के द्वारा ही सकता है।

महायानी (महासांघिक) के योगाचार तथा माध्यमिक दो सम्प्रदाय हुए। योगाचार सम्प्रदाय के अनुयायी यह मानते थे कि बाह्य-जगत् की सत्ता नहीं है, केवल

आन्तरिक चित् ही सत् है, ये सम्प्रदाय विज्ञानवादी भी कहे जाते हैं। वहीं, माध्यमिक न तो बाह्य और न ही आन्तरिक जगत् की सत्ता को स्वीकार करते हैं, ये सम्प्रदाय शून्यवादी भी कहे जाते हैं।

महात्मा बुद्ध ने स्वयं न तो कुछ लिखा है और न ही संकलित किया है। हाँ, बुद्ध की मृत्यु के पश्चात् उनके कुछ शिष्यों ने बुद्ध के उपदेशों को संकलित किया है। जिन्हे 'त्रिपिटक' (तीन पिटारी) की संज्ञा दी गई है। ये त्रिपिटक हैं — (1.) विनय पिटक (2.) सुत्त पिटक (3.) अभिधम्म पिटक। ये पिटक ही बौद्ध-दर्शन के ग्रंथ माने जाते हैं। 'विनय पिटक' में आचरण-सम्बन्धी उपदेशों का संकलन है, वहीं 'सुत्त पिटक' में धर्म-सम्बन्धी उपदेशों का, तथा 'अभिधम्म पिटक' में दार्शनिक उपदेशों का संकलन है। बौद्ध-दर्शन केवल दो ही प्रमाणों को स्वीकार करते हैं — प्रत्यक्ष और अनुमान।

अनात्मवाद: — 'आत्मा' सम्बन्धी विचार लगभग सभी भारतीय दर्शनिकों का एक मुख्य केन्द्रीय बिन्दु रहा है। इसलिए भारतीय दर्शन में आत्मा एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। अधिकांश भारतीय दार्शनिक शरीर से अलग आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं, जिनके अनुसार शरीर के नष्ट होने के पश्चात् भी आत्मा का अस्तित्व बना रहता है। आत्मा के लिए शरीर एक नया चोला है जिसे वह शरीर के नष्ट होने पर नया चोला ग्रहण करती है। इस प्रकार से आत्मा का पुनर्जन्म तथा जन्म-मरण-चक्र का सिलसिला चलते रहती है, और यह तबतक चलती रहती है जबतक आत्मा को मुक्ति नहीं

मिल जाती। भारतीय दार्शनिक आत्मा के इस सामान्य स्वरूप पर सहमत है जिनमें सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, वेदान्त, मीमांसा और जैन मत आते हैं। किंतु बौद्ध और चार्वाक ऐसे दो दर्शन है जो आत्मा के इस सामान्य स्वरूप को स्वीकार नहीं करते। बौद्ध और चार्वाक आत्मा के किसी अजर-अमर अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते. इसी कारण से इन दोनों के आत्मा संबंधी विचारों को अनात्मवाद या नैरात्मवाद कहा जाता है। चार्वाक तथा बौद्ध दोनों अनात्मवादी है परन्तु दोनों में काफी अन्तर भी है। जहाँ चार्वाक चैतन्यविशिष्ट शरीर को ही आत्मा अर्थात् 'मैं' कहते है तथा सांसारिक शारीरिक-सुखों की तृप्ति को ही जीवन का परम लक्ष्य मानते है एवं आत्मा की अजर-अमर अस्तित्व को अस्वीकार करते है। वहीं बौद्ध सभी प्रकार की कामनाओं का निषेध करते है।

Rishikesh
12-05-2020

Scanned with CamScanner